एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 05 (सितंबर-अक्टूबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

बेर में दैहिक विकार एवं उनका प्रबंधन

(*मुकेश चंद भठेश्वर)
उद्यान विज्ञान विभाग, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, राजस्थान-303329
*संवादी लेखक का ईमेल पता: mukeshchandbhateshwar@gmail.com

प्राचीन काल से बेर हमारे देश में बहुतायत से उगाया जाने वाला फल है। श्रेष्ठ पोषक गुणों के कारण इसे गरीबो का सेब भी कहा जाता है। इसमें विटामिन सी, व बी एवं खनिज पदार्थ प्रचुर मात्रा में पाए जाते है। यह बहुत ही साधारण फल है जो कि कम दामों पर उपलब्ध रहता है।

जलवायु : बेर शुष्क एवं गर्म जलवायु का फल है, जिसको बहुत ही कम मात्रा में नमी या पानी की आवश्यकता रहती है। सरद ऋतू में फल देने के बाद इसके वृक्ष ग्रीष्मकाल में सुप्तावस्था में चले जाते है।

भूमि : बेर लगभग सभी प्रकार की भूमि में आसानी से उगाया जा सकता है, परन्तु बलुई दोमट भूमि, जिसमे जीवांश पदार्थो की मात्रा पर्याप्त हो, इसकी खेती के लिए उत्तम मानी जाती है। जिस भूमि का पी एच मान 8.5 हो वहा पर इसकी बढ़वार अच्छी करता है।

फूल आना तथा फलत : बेर में फूल नये प्ररोहो पर अगस्त – सितम्बर माह में आते है। शुरु में फलो के झड़ने की समस्या रहती है। इसे रोकने के लिए जिब्रेलिक अम्ल 10 पीपीएम तथा 2, 4 – डी का 10 पीपीएम का बहार के समय छिड़काव करे।

बेर के प्रमुख दैहिक विकार

अपरिपक्व फलो का गिरना : बेर के बगीचे में अपरिपक्व फलो का गिरना किसानो के लिए एक प्रमुख समस्या है। इसमें फल परिपक्व होने से पूर्व ही फल भूमि पर गिर जाते है। इस प्रकार की समस्या आमतौर पर बेर में फल जमने के बाद बहुत ही कम मात्रा में फलो का निषेचन होना, भूमि में अधिक नमी एवं तेज हवा के कारण भी फल गिर जाते है इस प्रकार की समस्या आमतौर पर फल आने के एक से दो माह बाद आती है। अपरिपक्व फलो के गिरने की प्रमुख समस्या इलाइची, बनारसी, अलीगंज एवं कारका किस्म में सर्वाधिक पायी जाती है।

निवारण : इस प्रकार के दैहिक विकार से फलो को गिरने से बचाने के लिए मर्दा नमी को नियंत्रण करके, व इसके प्रति रोधी किस्म पोंडा का चुनाव करके व पादप वर्दी हॉर्मोन 2, 4 – डी का 10–20 पीपीएम एवं पालनोफिक्स के 400 पीपीएम का पर्ण स्प्रे करने से फलो को गिरने से रोका जा सकता है।

असमान फलो का पकना : फलो का असमान मात्रा में परिपक्व होना बेर के बगीचे में प्रमुख समस्या बनी रहती है। इसमें फल एक साथ परिपक्व नही होकर कुछ फल समय से पहले पक जाते है। एवं कुछ काफी समय बाद पकते है ।

निवारण : फलो को एक साथ परिपक्व करने के लिए एथ्रेल के 1000 पीपीएम का पर्ण स्प्रे करे।

पाला : दिसंबर – जनवरी माह में शीत लहर के चलते वायुमंडल में उपस्थित जल वाष्प जब पेड़ पौधों की पत्तियों अथवा किसी ठोस पदार्थ के सम्पर्क में आती है जिनका तापमान 0°सेल्सियस अथवा इससे नीचे है तो यह बर्फ की चादर के रूप में जमने लग जाती है। यह पाला कहलाता है। दिसंबर – जनवरी माह में बेर के बगीचों में पाले द्वारा सर्वाधिक नुकसान होता है। जिसके कारण फल भूमि पर परत के रूप में जमा हो जाते है। पाले द्वारा बेर बगीचों में 60–70 प्रतिशत नुकसान होता है।

बचाव के उपाए : उत्तर पश्चिम दिशा में वायुरोधी वृक्ष लगाकर दिसंबर – जनवरी माह में चलने वाली शीतलहर से फल वृक्षों को बचाया जा सकता है। मध्यरात्रि खेत के चारो तरफ धुआँ करके।
जिस दिन पाला पड़ने की समभावना हो उसे दिन सिंचाई करके पोधो को पाले से बचाया किया जा सकता है। सल्फ्यूरिक अम्ल (H_2S0_4) 0.1 प्रतिशत का पर्ण स्प्रे करे।

फलो का फटना : फलो का फटना बेर उधान में एक सामान्य समस्या है। जिसमे फल फट कर खराब हो जाते एवं उनकी गुणवत्ता में कमी आ जाती है ऐसे फलों का बाजार भाव बहुत नीचे गिर जाता है क्योंकि उन्हें खरीदना कोई पसन्द नहीं करता है। विभिन्न शोधकर्त्ताओं ने इस घटना के लिए विभिन्न कारणों को उत्तरदायी ठहराया है। लेकिन अधिकांश लोगों के मतानुसार भूमि में पानी का बाहुल्य तथा वातावरण में उच्च आद्रता के फलस्वरूप पेड की पत्तियों से वाष्पीकरण में अत्यन्त कमी ही इस घटना का प्रमुख कारण माना गया है।
निवारण : फलो को फटने से बचाने के लिए कैल्शियम, व बोरेक्स उर्वरक का पर्ण छिड़काव करे। बेर की फल फटने से रोग रोधी किस्म सेब की खेती करे।

कम मात्रा में फलों का बनना
लक्षण : कम फल उत्पादन या फल गठन की कमी।
कारण खराब परागण, अपर्याप्त पोषक तत्व आपूर्ति, या फूल के दौरान अत्यधिक तापमान।
निवारण : सही पेड़ की छंटाई (Pruning): पेड़ की छंटाई से फूलों को बेहतर ढंग से सूरज की रोशनी और हवा मिलती है, जिससे फलों के सेटिंग की प्रक्रिया में सुधार होता है।
अनावश्यक और सूखे शाखाओं को हटाएं ताकि पेड़ पर अच्छे फूल आ सकें।
फूलों की निषेचनः फल सेटिंग में फूलों का सही निषेचन बहुत महत्वपूर्ण है। यदि आपकी फसल पर स्वाभाविक रूप से कीट नहीं आ रहे हैं, तो आप मैन्युअल रूप से निषेचन कर सकते हैं।
कीटों और मधुमक्खियों को आकर्षित करने के लिए फूलों के पास सुगंधित पौधे लगाएं।
पोषक तत्वों की आपूर्तिः पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने के लिए संतुलित उर्वरकों का उपयोग करें।
फूल और फल विकास के लिए विशेष रूप से फास्फोरस और पोटाश से भरपूर उर्वरकों का उपयोग करें।
उचित तापमान : अत्यधिक गर्मी या ठंड से बचने के लिए पेड़ की सुरक्षा करें।
फूलों की अवधि के दौरान तापमान को नियंत्रित करने के लिए छायादार व्यवस्था करें।

फल सड़न
लक्षणः फल का नरम होना, उसका रंग बदलना और सड़ना।
कारण फफूंद या जीवाणु संक्रमण, जो अक्सर उच्च आर्द्रता और खराब वायु परिसंचरण के कारण बढ़ जाता है।
निवारण : रोग रोधी किस्म की खेती करे, मैनकोजेब यह भी एक प्रभावी कवकनाशी है, जो बेर फलों में सड़न को नियंत्रित करने में मदद करता है। इसे निर्देशित मात्रा में पानी में घोलकर छिड़काव करें, खासकर फूल और फल सेटिंग के समय।